ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

03 October 2024

असम की स्वैलोटेल तितलियाँ

सन्दर्भ: हाल ही में एक शोध से पता चला है कि असम के बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र में स्वैलोटेल तितलियों की संख्या में उल्लेखनीय कमी आई है, जिसका मुख्य कारण औषधीय पौधों का अत्यधिक दोहन है।

- अध्ययन में अवैध मवेशी पालन, कृषि, चाय की खेती, अवैध पेड़ों की कटाई और कीटनाशकों के उपयोग जैसे खतरों पर भी प्रकाश डाला गया है।
- प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ ने इन तितलियों को वैश्विक रूप से लुप्तप्राय के रूप में वर्गीकृत किया है, जिससे उनके आवासों की रक्षा और उनके अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए संरक्षण प्रयासों की तत्काल चिंताएँ पैदा हुई हैं।

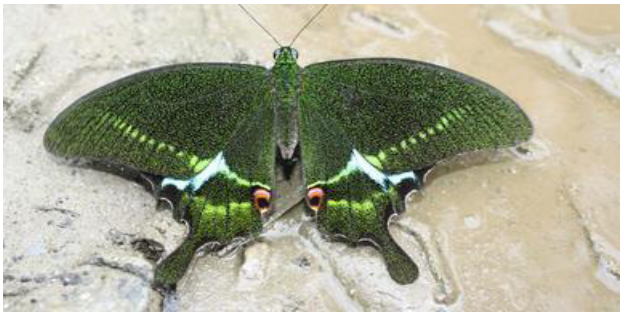

शोध के मुख्य निष्कर्ष:

स्वैलोटेल तितलियों पर खतरे का कारण:

- मूल्यवान औषधीय गुणों पर 25 प्रजातियों के मेजबान पौधों का अत्यधिक दोहन। (मेजबान पौधे, वे पौधे हैं जिन पर जीव का आवास होता है और जिन पर वे निर्भर रहते है।)
- संरक्षित क्षेत्रों में अवैध मवेशी पालन।
- तितली आवासों के पास कृषि और चाय की खेती।
- अवैध पेड़ों की कटाई।
- कीटनाशकों के उपयोग से तितली आबादी का प्रभावित होना।

तितली की जनसंख्या स्थिति:

- स्वैलोटेल तितलियों की संख्या में गिरावट, जो दो दशकों पहले बड़ी समस्या नहीं थी, ने अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) को इन्हें वैश्विक स्तर पर लुप्तप्राय घोषित करने के लिए मजबूर कर दिया है।
- भारत, विश्वभर में दर्ज 573 स्वैलोटेल तितली प्रजातियों में से 77 प्रजातियों का निवास स्थल है। विशेष रूप से, पूर्वोत्तर भारत को 'स्वैलोटेल-समृद्ध क्षेत्र' के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो जैव विविधता के संरक्षण और पर्यावरणीय स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण संकेतक

- स्वैलोटेल तितलियाँ पर्यावरणीय स्वास्थ्य के मूल्यवान संकेतक के रूप में काम करती हैं।
- इन तितलियों की उपस्थिति संख्या, विविधता पारिस्थितिकी तंत्रों की स्वास्थ्य स्थिति का संकेतक होती है।

बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र के बारे में:

- बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र 8,970 वर्ग किमी में फैला हुआ है, जिसमें लगभग 40% क्षेत्र वनाच्छादित है, जोकि मुख्य रूप से भूटान सीमा के पास है।
- यह अध्ययन क्षेत्र, विशेषकर मानस बायोस्फीयर रिजर्व, तितलियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह छह विभिन्न परिवारों से संबंधित 25 मेजबान पौधों की प्रजातियों का संरक्षण करता है।
- यह क्षेत्र अपनी साइट्रस जैव विविधता के लिए महत्वपूर्ण है, जिसमें 17 साइट्रस प्रजातियों की 52 किस्में और 6 संभावित संकर प्रजातियाँ हैं।
- साइट्रस पौधे स्वेलोटेल लार्वा के विकास के लिए आवश्यक हैं, विशेष रूप से पैपिलियो जीनस के।

मेजबान पौधे का दोहन:

- एरिस्टोलोचियासी परिवार की तीन प्रजातियों की व्यापक कटाई ने एट्रोफेनुरा, पचलियोप्टा और ट्रायोड्स जेनेरा से स्वेलोटेल तितलियों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है, जो भोजन के लिए विशेष रूप से इन पौधों पर निर्भर हैं।
- पारंपरिक चिकित्सा में उपयोग किए जाने वाले पौधे लिगुस्ट्रम कॉर्डेटम का दोहन भी लैम्प्रोप्टेरा जीनस को प्रभावित करता है।
- ग्रैफियम जीनस की तितलियों पर भी इसी तरह की चिंताएँ लागू होती हैं, जो लॉरेसी और मैग्नोलियासी परिवारों के पौधों पर निर्भर हैं।

अस्तित्व की चुनौती:

- मेजबान पौधों के संसाधनों में कमी से स्वैलोटेल तितलियों के दीर्घकालिक अस्तित्व और पारिस्थितिक स्वास्थ्य के बारे में महत्वपूर्ण चिंताएँ पैदा होती हैं, क्योंकि ये पौधे उनके जीवनचक्र और प्रजनन के लिए आवश्यक हैं।

असम राज्य के आठ पारंपरिक उत्पादों को भौगोलिक संकेत (GI) टैग

सन्दर्भ: हाल ही में चेन्नई स्थित भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री ने असम राज्य के आठ पारंपरिक उत्पादों को GI टैग प्रदान किया है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

GI टैग प्राप्त उत्पाद:

विशिष्ट चावल बियर:

- **'बोडो जोउ ग्वारन':** इसमें 16.11% अल्कोहल की मात्रा होती है, जो इस क्षेत्र की पारंपरिक शराब बनाने की कला को दर्शाता है।
- **'मैब्रा जोउ बिडवी':** यह एक लोकप्रिय स्वागत पेय है, जो आधा पका हुआ चावल और खमीर से तैयार किया जाता है।
- **'बोडो जोउ गिशी':** यह बोडो समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ा हुआ है और इन पेय पदार्थों से संबंधित गहरे पारंपरिक रीति-रिवाजों को दर्शाता है।

पारंपरिक व्यंजन:

- **'बोडो नफाम':** यह पारंपरिक रूप से धूम्रपान और नमक के जरिए संरक्षित मछली से बना एक व्यंजन है।
- **'बोडो ओंडला':** यह चावल के आटे से बना एक स्वादिष्ट करी है।
- **'बोडो नारजी':** यह एक अर्ध-खमीरयुक्त भोजन है, जिसमें ओमेगा-3 फैटी एसिड की अधिक मात्रा पाई जाती है।
- **'बोडो ग्वखा' (ग्वका ग्वखी):** यह बोडो समुदाय द्वारा ब्विसागु त्योहार के दौरान तैयार किया जाने वाला पारंपरिक व्यंजन है।

पारंपरिक शिल्पकला:

- **'बोडो एरोनाई':** यह हाथ से बुना हुआ कपड़ा है, जिसे GI टैग मिला है।

भौगोलिक संकेत (GI) टैग के बारे में:

- भौगोलिक संकेत (GI) एक संकेतक है जो यह बताता है कि कोई वस्तु विशेष गुणों या प्रतिष्ठा के साथ किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र से उत्पन्न हुई है। इसका मतलब है कि इस उत्पाद की विशेषताएँ या प्रतिष्ठा उस क्षेत्र के मूल स्थान से जुड़ी हुई हैं।
- **कानूनी ढांचा:** भारत में GIs का संरक्षण और पंजीकरण 'भौगोलिक संकेतक वस्तु (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999' के तहत किया जाता है।
- **क्षेत्र:** GI टैग मुख्य रूप से कृषि उत्पादों, प्राकृतिक उत्पादों, और हस्तशिल्प और औद्योगिक वस्तुओं सहित निर्मित वस्तुओं पर लागू होता है।
- **मान्यता की अवधि:** GI टैग 10 वर्षों के लिए वैध होता है और इसके बाद इसे नवीनीकृत किया जा सकता है।

मारबर्ग वायरस रोग (एमवीडी)

संदर्भ: रवांडा में मारबर्ग वायरस रोग (एमवीडी) के प्रकोप के कारण छह लोगों की मौत हो गई है, जिनमें से अधिकतर स्वास्थ्यकर्मी हैं।

मारबर्ग वायरस रोग:

- मारबर्ग वायरस रोग (एमवीडी) एक अत्यधिक घातक बीमारी है, जो मारबर्ग वायरस के कारण होती है।
- यह इबोला वायरस के समान फिलोविरिडे परिवार से संबंधित है, जो गंभीर रक्तस्रावी बुखार का कारण बनता है।

उत्पत्ति:

- पहली बार 1967 में जर्मनी के मारबर्ग में पहचाना गया, जब प्रयोगशाला कर्मचारी युगांडा के संक्रमित हरे बंदरों के संपर्क में आए थे।
- मिस्र का रौसेट चमगादड़ (रूसेटस एजिपियाकस) मारबर्गवायरस का प्राकृतिक भंडार है और मनुष्यों में वायरस के फैलने का लगातार स्रोत है।

संक्रमण:

- मारबर्ग वायरस रोग चमगादड़ों से मनुष्यों में जूनोटिक संक्रमण के माध्यम से फैल सकता है और फिर सीधे संपर्क के माध्यम से मनुष्य से मनुष्य में रक्तस्राव, संक्रमित व्यक्ति के अन्य शारीरिक तरल पदार्थ से फैल सकता है
- यदि सुरक्षात्मक उपाय नहीं किए गए हैं, तो संक्रमित व्यक्तियों के स्वास्थ्य सेवा कर्मी, देखभाल करने वाले और परिवार के सदस्य उच्च जोखिम में होते हैं।

मारबर्ग वायरस रोग के लक्षण:

- रोग के शुरुआती लक्षणों में तेज बुखार, गंभीर सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द और धड़ पर चपटे और उभरे दाने शामिल हैं। मरीजों को सीने में दर्द, गले में खराश, साथ ही मतली, उल्टी और दस्त का भी अनुभव हो सकता है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

- मारबर्ग वायरस रोग के उन्नत लक्षण गंभीर होते हैं, जैसे लीवर फेलियर, प्रलाप और सदमा। इस चरण में, रोगी को आंतरिक और बाहरी रक्तस्राव हो सकता है, जिससे कई अंगों में शिथिलता उत्पन्न होती है। इससे मृत्यु का जोखिम काफी बढ़ जाता है, जिसके कारण त्वरित चिकित्सा सहायता की आवश्यकता होती है।
- **मृत्यु दर:** वायरस के प्रकार और चिकित्सा देखभाल की गुणवत्ता के आधार पर, औसतन 50% के साथ 24% से 88% तक होती है।

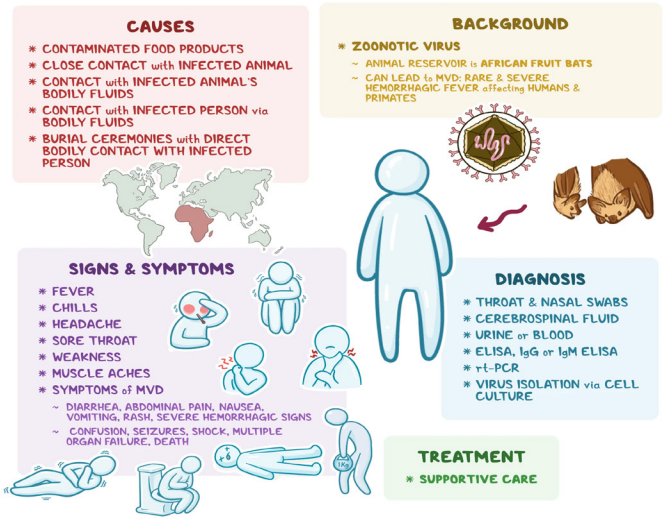

उपचार और रोकथाम:

- वर्तमान में, मारबर्ग वायरस रोग (MVD) के लिए कोई विशिष्ट उपचार या टीका उपलब्ध नहीं है। सहायक देखभाल इस बीमारी के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सहायक देखभाल में निम्नलिखित शामिल हैं:
  - » तरल पदार्थ का उपयोग
  - » इलेक्ट्रोलाइट संतुलन
  - » ऑक्सीजन पूरकता
  - » रक्त उत्पाद प्रतिस्थापन

रोकथाम:

- मारबर्ग वायरस के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए निवारक उपाय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रमुख निवारक रणनीतियों में शामिल हैं:
  - » अच्छी स्वच्छता प्रथाएँ, विशेषकर हाथ धोने की आदतें।
  - » संक्रमित व्यक्तियों के शारीरिक तरल पदार्थों के सीधे संपर्क से बचाव।
  - » स्वास्थ्य सेवा कर्मियों और देखभाल करने वालों के लिए सुरक्षात्मक दस्ताने, मास्क, गाउन का उपयोग।
  - » जानवरों की सुरक्षित हैंडलिंग और पशु उत्पादों को अच्छे से पकाना सुनिश्चित करना।

पॉवर पैक्ड न्यूज

'क्रूज भारत मिशन'

- हाल ही में केंद्रीय पोर्ट्स, शिपिंग और जलमार्ग मंत्री, श्री सर्बानंद सोनोवाल ने 1 अक्टूबर 2024 को मुंबई बंदरगाह से 'क्रूज भारत मिशन' का शुभारंभ किया। मिशन के मुख्य उद्देश्य 2029 तक क्रूज यात्रियों की संख्या को दोगुना करना व भारत को वैश्विक क्रूज पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित करना है

- **मिशन के तहत तीन मुख्य क्रूज क्षेत्र:**
- **महासागर और बंदरगाह:** समुद्री क्रूज के लिए बुनियादी ढांचे में सुधार करना
- **नदी और अंतर्देशीय जलमार्ग:** नदी और जलमार्गों पर क्रूज पर्यटन को बढ़ावा देना
- **द्वीप विकास:** द्वीपों पर क्रूज पर्यटन को विकसित करना और उनकी सुंदरता को दुनिया के सामने पेश करना
- क्रूज भारत मिशन तीन चरणों में क्रियान्वित किया जाएगा:
- **चरण 1 (1 अक्टूबर, 2024 - 30 सितंबर, 2025):** इस चरण में अध्ययन करने, मास्टर प्लानिंग करने और पड़ोसी देशों के साथ क्रूज गठबंधन बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
- **चरण 2 (1 अक्टूबर, 2025- 31 मार्च, 2027):** यह चरण उच्च-संभावित क्रूज स्थानों और सर्किटों को सक्रिय करने के लिए नए क्रूज

टर्मिनलों, मरीनाओं और गंतव्यों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करेगा।

- **चरण 3 (1 अप्रैल, 2027 – 31 मार्च, 2029):** यह अंतिम चरण भारतीय उपमहाद्वीप में सभी क्रूज सर्किटों को एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित करेगा।

मौद्रिक नीति समिति (MPC)

- हाल ही में, केंद्र सरकार ने भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की मौद्रिक नीति समिति (MPC) का पुनर्गठन किया है और 3 नए सदस्यों की घोषणा की है।
- इस समिति में तीन सदस्य RBI के होते हैं और तीन सदस्य सरकार द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। इन सदस्यों का कार्यकाल चार साल या अगले आदेश तक होता है।
- मौद्रिक नीति समिति (MPC) की स्थापना RBI अधिनियम 1934 की धारा 45ZB के तहत केंद्र सरकार द्वारा की गई थी। MPC की जिम्मेदारी ब्याज दरें तय करना और मूल्य स्थिरता सुनिश्चित करना है।
- सरकार द्वारा नियुक्त किए गए नए सदस्य:
- राम सिंह, निदेशक, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय
- सौगत भट्टाचार्य, अर्थशास्त्री
- नागेश कुमार, निदेशक और मुख्य कार्यकारी, औद्योगिक विकास अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली

सर्जन वाइस एडमिरल आरती सरीन: AFMS की पहली महिला महानिदेशक

- सर्जन वाइस एडमिरल आरती सरीन सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा (AFMS) की महानिदेशक बनने वाली पहली महिला हैं। उनका यह पद AFMS में 46वां है। रक्षा मंत्रालय ने उनकी नियुक्ति की घोषणा की। वे सशस्त्र बलों की सभी चिकित्सा नीतियों की जिम्मेदारी संभालेंगी।
- वाइस एडमिरल आरती सरीन ने नौसेना और वायुसेना की चिकित्सा सेवाओं की प्रमुख के रूप में काम किया है। इसके अलावा, वे पुणे के सशस्त्र बल चिकित्सा महाविद्यालय (AFMC) की प्रमुख रही हैं, जहां से उन्होंने पढ़ाई भी की है। उन्होंने दिसंबर 1985 में सशस्त्र बल चिकित्सा सेवाओं में शामिल होकर रेडियोडायग्नोसिस में एमडी की डिग्री प्राप्त की।
- उन्होंने टाटा मेमोरियल अस्पताल से रेडिएशन ऑन्कोलॉजी में विशेषज्ञता हासिल की और अमेरिका के यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग से गामा नाइफ सर्जरी में प्रशिक्षण लिया है। उन्हें 2024 में अति विशिष्ट सेवा पदक और 2021 में विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया है।

स्वच्छ भारत मिशन के पूरे हुए 10 वर्ष

- हाल ही में स्वच्छ भारत मिशन के 10 वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर 'स्वच्छ भारत दिवस 2024' कार्यक्रम में भाग लिया।

स्वच्छ भारत मिशन की उपलब्धियाँ:

- स्वच्छ भारत मिशन के तहत 12 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण किया गया, जिसके फलस्वरूप भारत को खुले में शौच से मुक्त (ODF) घोषित

किया गया। 2014 में देश में शौचालय कवरेज मात्र 40% था, जोकि 2019 तक बढ़कर 100% हो गया।

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, 2014 से 2019 के बीच स्वच्छता अभियानों ने 3 लाख से अधिक लोगों की जान बचाई, जोकि डायरिया जैसी बीमारियों के कारण जान गंवा सकते थे।
- अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान, वाशिंगटन, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय और ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के शोध के अनुसार स्वच्छ भारत मिशन से हर साल 60,000-70,000 बच्चों की जान बचाई जा रही है।

स्वच्छ भारत मिशन:

- 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत हुई थी।
- इस मिशन का उद्देश्य 2 अक्टूबर 2019 तक सभी गांवों और शहरों को खुले में शौच से मुक्त (ODF) बनाना था। इस मिशन के शहरी घटक का क्रियान्वयन आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा और ग्रामीण घटक का क्रियान्वयन जल शक्ति मंत्रालय द्वारा किया जाता है।